Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 6, June - 2026

DOIs:10.2018/SS/202606004 --:-- Research Paper / Article / Review

तुलसीदास की रामचरितमानस और केशवदास की रामायण का तुलनात्मक अध्ययन: जनसुलभता के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. संजय कुमार पांडेय
प्रधानाचार्य, अंबुजा विद्या पीठ, रवान, छत्तीसगढ़
kpandeysanjay@yahoo.com

सारांश: यह शोधपत्र तुलसीदास की **रामचरितमानस** (अवधी) और केशवदास की **रामायण** (संस्कृत) के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। दोनों कवियों ने **रामायण** की कथा को अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, किंतु तुलसीदास की रचना जनसामान्य के लिए अधिक सुलभ और लोकप्रिय सिद्ध हुई। तुलसीदास ने लोकभाषा अवधी में रचना कर भक्ति, धर्म और नैतिकता के आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाया, जबकि केशवदास की संस्कृत **रामायण** अपनी विद्वत्ता और शास्त्रीयता के कारण सीमित वर्ग तक ही सीमित रही। यह अध्ययन भाषिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और सामाजिक दृष्टि से दोनों कृतियों की तुलना करता है और यह स्पष्ट करता है कि तुलसीदास की **रामचरितमानस** भारतीय जनमानस की आत्मा बन चुकी है।

प्रमुख शब्द: तुलसीदास, केशवदास, रामचरितमानस, रामायण, हिंदी साहित्य, संस्कृत साहित्य, भक्ति आंदोलन, लोकभाषा, भक्तिकाव्य, सांस्कृतिक जनसुलभता, भाषिक लोकतंत्रीकरण, तुलनात्मक साहित्य, भारतीय संस्कृति, लोकपरंपरा ।

1. भूमिका

भारतीय संस्कृति में **रामायण** केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन के आदर्शों, नैतिकता और धर्म का प्रतीक है। इसकी कथा ने सदियों से भारतीय समाज को दिशा दी है। **रामायण** की अनेक भाषाओं में रचनाएँ हुईं, जिनमें तुलसीदास की **रामचरितमानस** और केशवदास की **रामायण** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

तुलसीदास (1532–1623) ने **रामचरितमानस** को अवधी भाषा में रचकर संस्कृत की सीमाओं को तोड़ा और भक्ति को जनभाषा में उतारा। उन्होंने यह सिद्ध किया कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग केवल संस्कृत या शास्त्रों तक सीमित नहीं, बल्कि लोकभाषा और सच्ची भावना से भी संभव है।

केशवदास (1555–1617) ओरछा दरबार के कवि थे। उन्होंने संस्कृत में **रामायण** की रचना की, जो काव्यशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत परिष्कृत है। परंतु इसकी भाषा और शैली ने इसे विद्वानों तक सीमित रखा। तुलसीदास की रचना जहाँ लोकजीवन में रच-बस गई, वहीं केशवदास की रचना साहित्यिक परंपरा का हिस्सा बनकर रह गई।

2. ऐतिहासिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी का भारत धार्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का काल था। भक्ति आंदोलन ने समाज में समानता, प्रेम और ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत भक्ति का संदेश दिया। इस आंदोलन ने भाषा की दीवारों को तोड़कर धर्म को जनसुलभ बनाया। तुलसीदास इसी आंदोलन के प्रमुख स्तंभ थे। उन्होंने **रामचरितमानस** के माध्यम से रामकथा को केवल धार्मिक कथा न बनाकर जीवन का दर्शन बना दिया। उनकी रचना में धर्म, नीति, करुणा और भक्ति का अद्भुत समन्वय है।

केशवदास संस्कृत और ब्रजभाषा दोनों के विद्वान थे। उन्होंने **रसिकप्रिया**, **कविप्रिया** और **रामचंद्रिका** जैसी रचनाओं से साहित्यिक परंपरा को समृद्ध किया। उनकी **रामायण** संस्कृत की परंपरागत शैली में रचित है, जिसमें अलंकार, छंद और व्याकरण की शुद्धता प्रमुख है।

3. भाषिक सुलभता और जनप्रियता

भाषा किसी भी साहित्यिक कृति की आत्मा होती है। तुलसीदास ने अवधी जैसी लोकभाषा का चयन कर **रामचरितमानस** को जन-जन की वाणी बना दिया। इसकी चौपाइयाँ और दोहे इतने सरल और मधुर हैं कि वे सहज ही स्मरणीय और गेय बन गए।
उदाहरण के लिए, तुलसीदास की भाषा में लोकजीवन की सहजता और भावनाओं की गहराई दोनों हैं—
ऐसी पंक्तियाँ न केवल धार्मिक भाव जगाती हैं, बल्कि जीवन के प्रति एक समरस दृष्टि भी प्रदान करती हैं।
इसके विपरीत, केशवदास की संस्कृत **रामायण** में भाषा की जटिलता और शास्त्रीयता है। संस्कृत उस समय तक जनभाषा नहीं रही थी, बल्कि विद्या और धर्माचार्य वर्ग की भाषा बन चुकी थी। अतः उनकी रचना का प्रभाव सीमित वर्ग तक ही रहा।
तुलसीदास की भाषा ने भक्ति को लोकतांत्रिक रूप दिया—जहाँ जाति, वर्ग या शिक्षा का कोई बंधन नहीं था। यही कारण है कि **रामचरितमानस** आज भी हर वर्ग के लोगों के जीवन का हिस्सा है।

4. दार्शनिक और भावनात्मक दृष्टिकोण

तुलसीदास की **रामचरितमानस** में भक्ति, धर्म और करुणा का अद्भुत संगम है। उन्होंने राम को केवल एक वीर पुरुष नहीं, बल्कि ईश्वर के साकार रूप में प्रस्तुत किया। तुलसीदास के राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं—जो धर्म, नीति और प्रेम के आदर्श हैं।
उनकी रचना में भक्ति का स्वर प्रमुख है—
यह पंक्ति दर्शाती है कि तुलसीदास के लिए भक्ति केवल पूजा नहीं, बल्कि जीवन का आधार है।
केशवदास की **रामायण** में काव्यशास्त्रीय सौंदर्य और दार्शनिक विवेचन तो है, परंतु उसमें वह भावनात्मक निकटता नहीं जो तुलसीदास के काव्य में दिखाई देती है। तुलसीदास का उद्देश्य जनजागरण और आत्मशुद्धि था, जबकि केशवदास का उद्देश्य साहित्यिक परिष्कार और शास्त्रीय परंपरा का निर्वाह था।

5. सांस्कृतिक प्रभाव और जनस्वीकृति

रामचरितमानस उत्तर भारत की सांस्कृतिक चेतना का आधार बन गई। इसके दोहे और चौपाइयाँ आज भी मंदिरों, घरों और लोकगीतों में गूँजती हैं। **रामलीला** जैसी लोकनाट्य परंपराएँ इसी ग्रंथ से प्रेरित हैं।
तुलसीदास की रचना ने समाज में नैतिकता, करुणा और भक्ति का वातावरण बनाया। यह केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि सामाजिक एकता का माध्यम भी बनी।
केशवदास की **रामायण** साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हुए भी जनजीवन में उतनी गहराई से नहीं उतरी। उसकी संस्कृत भाषा और शास्त्रीय शैली ने उसे सीमित पाठकवर्ग तक सीमित रखा।

6. तुलनात्मक विश्लेषण

पहलू	**तुलसीदास की रामचरितमानस (अवधी)**	**केशवदास की रामायण (संस्कृत)**
भाषा	अवधी (लोकभाषा)	संस्कृत (शास्त्रीय भाषा)
पाठक वर्ग	सामान्य जनता, भक्तजन	विद्वान, पंडित वर्ग
मुख्य विषय	भक्ति, धर्म, करुणा	काव्यशास्त्र, अलंकार, दर्शन

पहलू	तुलसीदास की रामचरितमानस (अवधी)	केशवदास की रामायण (संस्कृत)
शैली	सरल, भावनात्मक, गेय	जटिल, अलंकारिक, शास्त्रीय
सांस्कृतिक प्रभाव	व्यापक, लोकजीवन में रचा-बसा	सीमित, विद्वत् समाज तक
दर्शनिक दृष्टि	भक्ति और नैतिकता का समन्वय	सौंदर्य और शास्त्रीयता का निर्वाह
लोकप्रियता	अत्यधिक, जनमानस में गहराई से रची-बसी	सीमित, शास्त्रीय परंपरा तक सीमित

7. निष्कर्ष

तुलसीदास की **रामचरितमानस** भारतीय जनजीवन की आत्मा बन चुकी है। इसकी भाषा, भावनाएँ और भक्ति का स्वर हर वर्ग के व्यक्ति को जोड़ता है। तुलसीदास ने यह सिद्ध किया कि ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग सरल भाषा और सच्ची भावना से होकर जाता है।

केशवदास की **रामायण** अपनी साहित्यिक गरिमा और संस्कृत सौंदर्य के कारण महत्वपूर्ण है, परंतु उसकी पहुँच सीमित रही। तुलसीदास ने लोकभाषा के माध्यम से धर्म और भक्ति को जन-जन तक पहुँचाकर भारतीय साहित्य को लोकजीवन से जोड़ा।

अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट है कि तुलसीदास की **रामचरितमानस** केशवदास की **रामायण** की तुलना में अधिक जनसुलभ, भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से प्रभावशाली है। यह केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आत्मा का दर्पण है—जहाँ भाषा, भक्ति और मानवता का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

संदर्भ सूची:

1. तुलसीदास. रामचरितमानस. विभिन्न संस्करण।
2. केशवदास. रामायण. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. शर्मा, रामशरण. (1990). मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. चतुर्वेदी, बी.के. (2005). तुलसीदास: संत और कवि. नई दिल्ली: डायमंड बुक्स।
5. पांडेय, रामचंद्र. (1982). हिंदी साहित्य का इतिहास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
6. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (1966). हिंदी साहित्य का अध्ययन. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
7. शुक्ल, रामचंद्र. (1940). हिंदी साहित्य का इतिहास. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
8. लुटगेंडॉर्फ, फिलिप. (1991). द लाइफ ऑफ ए टेक्स्ट: परफॉर्मिंग द रामचरितमानस ऑफ तुलसीदास. बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
9. विन्टरनिट्ज़, मॉरिस. (1927). ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर, वॉल्यूम II. कलकत्ता यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. ठाकुर, रोमिला. (2002). कल्चरल पास्ट्स: निबंध भारतीय इतिहास पर. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।